राजाबरारी क्षेत्र के आदिवासी लोकसंगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग, आगरा से संगीत में

पी–एच.डी. की उपाधि हेतु

शोध–प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधकर्त्री

ओस सत्संगी

शोध–निर्देशक
प्रो० रवि कुमार भटनागर
संगीत–विभाग (गायन)

शोध सह–निर्देशिका
प्रो0 माया रानी टॉक
पूर्व विभागाध्यक्ष संगीत–विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

संगीत–विभाग, कला–संकाय

दयालबाग़ एजुकेषनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विष्वविद्यालय)

दयालबाग़, आगरा–282005

2020

भूमिका –

संगीत जनजातियों की सर्वोकृष्ट कला है। यह प्रकृति और संस्कृति के बीच मध्यस्थता करता है जिसके माध्यम से दो धाराओं के बीच संविलयन होता है। बाह्य प्रकृति की पहली धारा आगमिक, ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक है और आन्तरिक प्रकृति की दूसरी धारा आदिम, शारीरिक तथा प्राकृतिक है। जनजातियों का प्रकृति और संस्कृति के बीच जो संवाद होता है उसमें संगीत माध्यम बनकर संस्कृति की पहचान कराता है।

भारत में सांस्कृतिक और परंपरागत कलाओं को अभिव्यक्त करने के लिये मनुष्य सदैव कला का सहारा लेता रहा है। भारत के हर प्रदेश में कला की अपनी एक विशेष शैली, पद्धति व परम्परा रही है जिसे 'लोककला' के नाम जाना जाता रहा है। 'लोककला' के अन्तर्गत ही जनजातीय कलाएं, जो कि बहुत ही पारंपरिक और साधारण होने पर भी बहुत सजीव और प्रभावशाली होती हैं, उनसे देश की एक समृद्ध विरासत का अनुमान स्वतः ही हो जाता है।

डॉ० सत्येन्द्र जी के शब्दों में– ''लोक, मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो अभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है और जो एक परंपरा के प्रवाह में जीवित रहता है।''[1]

Encyclopaedia Britannica के अनुसार लोकसंगीत के सन्दर्भ में– "The primitive spontaneous music has been called folk song" (आदिमानव का उल्लासमय संगीत ही लोकसंगीत कहलाता है।)[2]

लोककलाओं में हमें सांस्कृतिक वैभव को देखने का अवसर प्राप्त होता है जिसने हमारे देश को एकता के सूत्र में बाँध रखा है। इन कलाओं में संगीत एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा मानव सामूहिक रूप से अपनी प्रतिभा को व्यक्त करने में सक्षम होता है। आदिवासी क्षेत्र का संगीत मात्र गायन ही नहीं, अपितु गीत, वाद्य तथा नृत्य का अभिन्न साहचर्य होता है।

जनजातीय संगीत का माध्यम भी नाद है तथा उसी से ही संगीत की सृष्टि होती है। नाद जनजातीय संगीत का एकमात्र उपादान है, किन्तु केवल नाद ही संगीत का जनक (आधार) नहीं है, क्योंकि नाद कितना भी मधुर हो, अकेले संगीत की सृष्टि नहीं कर सकता। एक विशेष

रूप आकार में ही वह संगीत हो सकता है, यद्यपि नृत्य में अंगाहार की प्रधानता होती है तथापि गीत, वाद्य के साथ उसका घनिष्ठ संबंध होता है।

लोकसंगीत के शब्द तथा स्वर उस स्थान विशेष की सभ्यता एवं संस्कृति को बताते हैं जिससे वह संबंधित होता है। इसमें भाव–पक्ष की प्रधानता होती है। लोकसंगीत में प्रयुक्त विभिन्न श्रुतियां, स्वर, सामूहिक संगीत के बंधन की आवश्यकता स्वीकृत नहीं। यदि शास्त्रीय संगीत का उद्देश्य सच्चिदानन्द प्राप्ति है तो लोकगीत में लोक–कल्याण की भावना निहित है।

लोकजीवन के लोकगीतों में जैसी सरलता, नैसर्गिक अनुभूतिमयी अभिव्यंजना का चित्रण देखने को मिलता है, वैसा अन्य कहीं नहीं दिखता। विषय–वस्तु को दृष्टिगत करते हुए यह स्पष्ट होता है कि किसी भी देश या राज्य की भौगोलिक स्थिति उस स्थान की ऐतिहासिक घटनाओं और आर्थिक विकास को बहुत अधिक प्रभावित करती है, साथ ही साथ सांस्कृतिक क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहता। अतः इस पर प्रभाव पड़ना अवश्यम्भावी है। इसी संदर्भ में भौगौलिक रूप से मध्यप्रदेश, देश के केन्द्रीय स्थान पर स्थित है। इस क्षेत्र में ग्रामीण लोक, आदिवासी संगीत, औपचारिक, धार्मिक संगीत और भारतीय शास्त्रीय संगीत शामिल हैं। मध्यप्रदेश अपने आंचल में एक समृद्ध संस्कृति को धारण करता है।

मध्यप्रदेश राज्य के अन्तर्गत जिला 'हरदा' स्थित है। 'हरदा' जिले के घने जंगलों के बीच बसा है राजाबरारी क्षेत्र, जो कि सतपुड़ा की उत्तरी ढलानों में स्थित है। यहाँ गंजाल नदी एवं इसकी सहायक नदियाँ–पुरज एवं काजल बहती हैं। सम्पूर्ण क्षेत्र की मध्य समुद्र तल से ऊँचाई लगभग 1250 फीट से 2081 फीट तक है। संपूर्ण क्षेत्र का जलोत्सर्जन गंजाल नदी में ही है। राजाबरारी क्षेत्र अत्यन्त सुन्दर व मनोरम क्षेत्र होने के साथ–साथ यहाँ का आदिवासी लोक–जीवन व संगीत अत्यन्त समृद्ध है।

आदिवासी शब्द का अर्थ मूल–निवासी होता है। यह आदि तथा वासी दो शब्दों से मिलकर बना है। सामान्य रूप से आदिवासी शब्द किसी भौगौलिक क्षेत्र के उन निवासियों के लिए प्रयुक्त किया जाता है जिनका उस भौगौलिक क्षेत्र से कोई विशेष सम्बन्ध रहा हो। दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि राजाबरारी क्षेत्र का आदिवासी लोकसंगीत वहाँ के

निवासियों की निश्छल एवं सहज अभिव्यक्ति है। वैदिक ऋृचाओं की तरह लोकसंगीत या लोकगीत अत्यन्त प्राचीन एवं मानवीय संवेदनाओं के सहजतम उद्‌गार हैं। लोकसंगीत ही वह माध्यम है जिसमें हम गायन, वादन एवं नृत्य तीनों विधाओं का समावेश कर सकते हैं।

लोकसंगीत में दो शब्दों का योग है– लोक और संगीत, जिसका अर्थ है लोगों का संगीत। लोक शब्द अंग्रेजी के 'फोक' (folk) का पर्याय है जो नगर तथा ग्राम की समस्त साधारण जनता का द्योतक है। इसी प्रकार सम्, सम्यक और 'गीत' शब्दों के योग से 'संगीत' शब्द बना है। सम् का अर्थ है अच्छा। वाद्य और नृत्य दोनों के मिलने से ही गीत अच्छा बनता है। इस सन्दर्भ में कतिपय विद्वानों के मत यहाँ प्रस्तुत हैं :–

पं. ओंकारनाथ ठाकुर जी के अनुसार – ''देशी संगीत की पृष्ठभूमि 'लोकसंगीत' है।''[3]

आचार्य युगल किशोर जी के अनुसार–''भारतीय संगीत का संस्कार लोक संस्कृति द्वारा ही हुआ है।''[4]

लोक संगीत 'Folk Lore' का भाषान्तर है। यहाँ 'लोक' अथवा 'फोक' का अर्थ 'सामुदायिक समाज' इस प्रकार से माना जा सकता है। लोकगीत सब मिलकर गाते हैं, अतः लोकगीत एवं लोकसंगीत का संबंध अटूट है। इसी से लोक–साहित्य, लोकगीत, लोकसंगीत इन सबमें 'लोक' शब्द महत्त्वपूर्ण है। 'लोक' से यहाँ 'समूह' अभिप्रेत है। अतः लोकसंगीत जिसमें हम किसी समाज के संस्कार व परंपराओं का दर्शन करते हैं, ऐसे परंपरागत व ऐतिहासिक धरोहर को सहेजना परम कर्त्तव्य है। राजाबरारी मात्र सामाजिक, आर्थिक आदि दृष्टि से ही नहीं अपितु सांस्कृतिक दृष्टि से भी समृद्ध है। यहाँ का लोकसंगीत गायन, वादन तथा नृत्य सौन्दर्यात्मक तत्त्वों से निहित है। लोकसंगीत हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर है जिसका संरक्षण अति आवश्यक है परन्तु यहाँ का लोकसंगीत अभी तक प्रकाश में नहीं आया है तथापि इसके संरक्षण की महती आवश्यकता शोधकर्त्री द्वारा अनुभव की गयी।

राजाबरारी के लोकसंगीत पर दृष्टिगत करने पर हमें ज्ञात होता है कि आदिवासियों का सारा जीवन गायन, वादन व नृत्य के विविध रूपों में व्याप्त है। ये लोग अनेक उत्सवों पर गाते, बजाते व नृत्य करते हैं एवं जीवन–यापन हेतु कृषि–खेतों आदि का कार्य करते हैं। ये लोग

सामूहिकता को विशेष बल देने हेतु सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि लेते हैं। अतः साहचर्य का प्रभाव मानव संस्कृति पर पड़ना स्वाभाविक है। राजाबरारी आदिवासी जनजातियों का एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ का आदिवासी लोकसंगीत अपने आप में अत्यन्त समृद्ध है परन्तु वर्तमान में यह धीरे–धीरे काल के गर्भ में विलुप्त होता जा रहा है। अतः इसके संरक्षण एवं संवर्धन हेतु इस विषय पर शोध कार्य होना अत्यन्त आवश्यक है। इसी तथ्य को दृष्टिगत करते हुए तथा यहाँ के लोकसंगीत को प्रकाश में लाने हेतु राजाबरारी क्षेत्र को शोध–अध्ययन हेतु शोधकर्त्री द्वारा चयनित किया गया।

अध्ययन की आवश्यकता

मध्यप्रदेश राज्य का नाम स्वयं एक सांस्कृतिक एकता का सूचक है, जो युग–युगान्तर से अपनी एक विशेष परम्परा को कायम रखे हुए हैं। यहाँ के विभिन्न प्रान्तों में प्रचलित लोक कलायें अपने वैशिष्ट्य को बिखेरती हैं। इसी संदर्भ में मध्य–प्रदेश के आदिवासी क्षेत्र राजाबरारी के लोकसंगीत में भी लोकदर्शन, जनमानस के आदर्श, विश्वास, विभिन्न रीति–रिवाज, पर्व–संस्कार तथा कई विभिन्न मान्यताएँ समाहित हैं, जिसका दिग्दर्शन इस प्रांत के लोक–संगीत में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। राजाबरारी क्षेत्र की अपनी एक अलग विशेषता है, यहाँ का लोक–संगीत जैसे–विवाह गीत, धार्मिक गीत जिसे 'नारदी भजन' भी कहते हैं, सावन के गीत, होली गीत, नृत्यों में चिटकोरी नृत्य, अहारी नृत्य, गदली नृत्य, लंगड़ी नृत्य, डंडा नृत्य आदि स्वयं में सौन्दर्य तत्त्वों से परिपूर्ण है।

मुख्य बात यह है कि आज तक आदिवासी लोगों द्वारा गाया बजाया गया संगीत विशेष प्रचलन में नहीं है, अतः इसको प्रकाश में लाना भी अनिवार्य है। चूँकि शोधकर्त्री स्वयं भी इस प्रान्त से जुड़ी हुई है, फलतः मध्यप्रदेश में स्थित, आदिवासी क्षेत्र राजाबरारी में प्रचलित लोकसंगीत के विभिन्न स्वरूप, उनकी विशेषतायें साथ ही मुख्य रूप से राजाबरारी क्षेत्र के लोकसंगीत के सांगीतिक पक्ष की जानकारी प्राप्त करने के लिए शोधकर्त्री को इस विषय के प्रति उत्सुकता रही। फलस्वरूप इस सम्बन्ध में अधिक से अधिक जानकारी एकत्र करने हेतु संबंधित साहित्य का अध्ययन शोधकर्त्री द्वारा किया गया जिसका विवरण निम्नवत है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

अपने विषय से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करने पर शोधकर्त्री को जो शोध प्रबन्ध तथा अन्य विषय सामग्री प्राप्त हुई, उसका विवरण इस प्रकार हैः–

शोध प्रबन्ध :–

- दीक्षित, रश्मि, संगीत एवं काव्य की दृष्टि से अवधी लोकगीतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, भट्टाचार्य, प्रो० पी०आर०
- खरे, रश्मि, उत्तर प्रदेश के लोग संगीत में लोक वाद्यों का ऐतिहासिक अध्ययन, दीक्षित, डॉ. रश्मि
- त्रिपाठी, रंजना, पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोकगीतों का संगीत शास्त्रीय अध्ययन, बैनर्जी, डॉ० गीता
- शर्मा, नेहा, बीकानेर की लोकसंगीत परंपरा का संगीतपरक अध्ययन, गुप्ता, डॉ० नीतू
- शाक्या, लीना प्रकाश, पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोकगीतों का संगीतपरक अध्ययन (विशेषकर बनारस, मिर्जापुर व जौनपुर के सन्दर्भ में), गुप्ता, डॉ० नीतू, श्रीवास्तव, प्रो० रश्मि।
- तिवारी, हर्ष कुमार, अवधी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
- पांडेय, श्रीमती पूनम, उत्तर भारत के ब्रजमंडलीय लोकगीतों एवं उनकी सांस्कृतिक परम्पराओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन, इंदिरा गाँधी संगीत विद्यालय, खेरागढ़।
- शर्मा, रेखा, उत्तर भारत के लोकवाद्यों का लोकनृत्यों में प्रयोगात्मक स्वरूपः एक अध्यन, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।
- भटनागर, सीमा, उत्तर भारतीय लोकसंगीत में परम्परा–निर्वाह के मूल घटकः एक विवेचनात्मक अध्ययन, भटनागर, सीमा, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय।
- शर्मा, भारती, ग्वालियर सम्भाग के लोकगीत, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय।
- पोहंकर, सुशीला, छत्तीसगढ़ी लोकसंगीत, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खेरागढ़।
- शांडिल्य, रामस्वरूप, जिला सोलोन के लोकसंगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय।
- पाठक, अनुसूया, ढूँढाड़ के लोकगीतों का सांगीतिक विवेचन, राजस्थान विश्वविद्यालय।

- गूजर, संतोष कुमार, निमाड़ी लोकगीतों का सांगीतिक अध्ययन, इंदिरा कला विश्वविद्यालय।
- शर्मा, विकास, पंजाब के लोकसंगीत का सांस्कृतिक वैशिष्टय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय।
- सिंह, अनिरूद्ध प्रसाद, बिहार में गाए जाने वाले लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय।
- चतुर्वेदी, हर्ष कुमार, बुन्देली लोकगीतों का शास्त्रीय अध्ययन, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, आगरा।
- तवासे, सुवर्णा, मध्यप्रदेश के लोकवाद्यों का अध्ययन, देवी अहल्या विश्वविद्यालय।

उपर्युक्त शोध विषय से संबंधित सभी प्रकाशित पाठ्य सामग्री, जो कुछ भी शोधकर्त्री को प्राप्त हो सका है उसको दृष्टिगत करते हुए यह स्पष्ट होता है कि उसमें विभिन्न प्रदेश के लोकसंगीत से सम्बन्धित जानकारी उपलब्ध है, परन्तु मध्य प्रदेश का आदिवासी क्षेत्र राजाबरारी जो अनेक तथ्यों को अपने आप में समाहित किये हुये हैं, अभी तक शोधकर्त्री की जानकारी में नहीं प्राप्त हुआ है। निश्चित रूप से प्रस्तुत विषय लोकसंगीत के क्षेत्र में एक विशेष दिशा का मार्ग प्रशस्त करता है जिस पर शोध कार्य करना अत्यन्त आवश्यक है।

अस्तु राजाबरारी क्षेत्र के आदिवासी क्षेत्र में प्रचलित लोकसंगीत पर गहनतापूर्वक अध्ययन की आवश्यकता है।

<u>विषय कथन</u>

राजाबरारी क्षेत्र के आदिवासी लोकसंगीत का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

<u>विषय में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या–</u>

(i) राजाबरारी – बरारी का अर्थ है गांव, अतः यहाँ राजाबरारी का तात्पर्य किसी राजा के गाँव से है।

(ii) आदिवासी– आदिम संस्कृति के अनुसार जीवनयापन करने वाले लोग आदिवासी कहलाते हैं।

(iii) लोक–संगीत– 'लोक' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'फोक' का पर्याय है जो नगर तथा ग्राम की साधारण जनता का द्योतक है। अतः 'लोक' में प्रचलित साधारण ग्रामीण जनता का संगीत लोकसंगीत कहलाता है।

अध्ययन के उद्‌देश्य –

(i) राजाबरारी क्षेत्र की भौगोलिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।

(ii) राजाबरारी क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।

(iii) राजाबरारी क्षेत्र की सांगीतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन।

(अ) राजाबरारी में प्रचलित लोकगीतों का अध्ययन करना।

(ब) राजाबरारी क्षेत्र के लोकसंगीत में प्रयुक्त लोकवाद्यों का अध्ययन करना।

(स) राजाबरारी क्षेत्र के लोकनृत्यों का अध्ययन करना।

(द) राजाबरारी क्षेत्र के लोकसंगीत में प्रयुक्त भाषा, रीति–रिवाज, वेष–भूषा आदि का अध्ययन करना।

परिसीमांकन –

प्रस्तुत शोध कार्य समय व सीमा को ध्यान में रखते हुए मध्यप्रदेश के राजाबरारी क्षेत्र, जो सतपुड़ा की उत्तरी ढलानों में स्थित है, वहाँ के प्रचलित लोक–संगीत (गायन, वादन, नृत्य) के अध्ययन तक ही सीमित रहेगा, जिससे शोध–कार्य गहनतापूर्वक व समय–सीमा के अन्तर्गत शोधकर्त्री द्वारा पूर्ण किया जा सके।

अध्ययन की विधि–

साक्षात्कार, सर्वेक्षणात्मक व विश्लेषणात्मक विधि।

अध्ययन के उपकरण–

दृश्य–श्रव्य सामग्री (कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल, लैपटॉप इत्यादि)।

अध्ययन के स्रोत्र–

पुस्तकालय, पत्र–पत्रिकाएँ, शोध–प्रपत्र तथा लोक कलाकारों से प्राप्त साक्षात्कार द्वारा।

<u>शोध का महत्त्व</u>

मध्यप्रदेश के अन्तर्गत राजाबरारी क्षेत्र अत्यन्त संकुचित सुविधाओं के बावजूद भी अपनी लोक–संस्कृति को जीवन्त रखे हुए हैं। संगीत जन–जातियों की सर्वोकृष्ट कला है क्योंकि यह प्रकृति व संस्कृति के बीच मध्यस्थता भी करता है। कहने का आशय यह है कि लोक संगीत जन–मानस में रचा बसा वह मधुर संगीत है जिसमें गीत, वाद्य व नृत्य प्रस्फुटित होते हैं। मात्र सामाजिक दृष्टि से ही नहीं अपितु सांस्कृतिक, ऐतिहासिक आदि दृष्टिकोण से भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

सर्वेक्षण की दृष्टि से जब शोधकर्त्री ने उपर्युक्त वर्णित विषय पर दृष्टिपात किया तो पाया कि मध्यप्रदेश क्षेत्र में स्थित राजाबरारी स्टेट पर अभी तक संगीत सम्बन्धी किसी भी प्रकार का कोई कार्य नहीं हुआ है।

शोधकर्त्री द्वारा वहाँ के प्रचलित लोकसंगीत को शोधकार्य के माध्यम से प्रकाश में लाना ही उद्देश्य है, जिससे भविष्य में संगीत के विद्यार्थियों को इस क्षेत्र की विस्तृत जानकारी प्राप्त हो सकेगी व शोध के नवीन पक्ष भी प्रदर्शित होंगे। अस्तु, यदि इस प्रयास से संगीत समाज को लाभ पहुँचता है व संगीत विद्यार्थियों को अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त होती है तो निश्चय ही शोधकर्त्री का प्रयास सफल सिद्ध होगा।

<u>अध्ययन की रूपरेखा</u> –

भूमिका

प्रथम अध्याय

आदिवासी क्षेत्र राजाबरारी का परिचयात्मक अध्ययन

(i) ऐतिहासिक अध्ययन

(ii) भौगोलिक अध्ययन

(iii) सांस्कृतिक अध्ययन

द्वितीय अध्याय

राजाबरारी क्षेत्र की प्रमुख संगीतजीवी जातियाँ

तृतीय अध्याय

राजाबरारी क्षेत्र के लोकसंगीत का संगीतपरक अध्ययन

(i) लोकगीतों का अध्ययन

(ii) लोकवाद्यों का अध्ययन

(iii) लोकनृत्यों का अध्ययन

चतुर्थ अध्याय

राजाबरारी क्षेत्र के प्रमुख लोक कलाकारों का परिचय एवं योगदान का अध्ययन।

पंचम अध्याय

राजाबरारी क्षेत्र के लोकगीतों की स्वरलिपियाँ

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ सूची

1. लोक साहित्य विज्ञान, डॉ० सत्येन्द्र, पृ0–3
2. Encyclopoedia Britannica, Vol. IX, P.-447
3. संगीत, 2012, पृष्ठ–12
4. संगीत, 2012, पृष्ठ–12

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें–

1. चक्रवर्ती, सुमिता, लोकसंगीत में प्रयुक्त वाद्य यंत्र, कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली–110002
2. डॉ० ज्योत्सना, लोकसंगीत में सांगीतिक एवं सौन्दर्यात्मक तत्त्व, प्रगतिशील प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. शुक्ला, डॉ० मधुरानी, लोक भाषा एवं संगीत, कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
4. व्यास, डॉ० सत्यनारायण, जनजातीय लोकगीत एक अध्ययन, अंकुर प्रकाशन, उदयपुर।
5. शुक्ल, डॉ० हीरालाल, आदिवासी संगीत, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।

पत्र/पत्रिकायें–

1. गर्ग, डॉ० मुकेश, संगीत, वर्ष 49/अंक–5 मई, 1983, संगीत कार्याल्य, हाथरस।
2. गर्ग, डॉ० मुकेश, संगीत, वर्ष 66/अंक–11 नवम्बर, 2000
3. गर्ग, डॉ० मुकेश, संगीत, वर्ष 68/वर्ष–68/अंक–3, मार्च 2002, संगीत कार्यालय, हाथरस
4. गर्ग, डॉ० मुकेश, संगीत, वर्ष 73/अंक–1 जनवरी, 2007 संगीत कार्यालय, हाथरस।
5. गर्ग, डॉ० मुकेश, संगीत, वर्ष 81/अंक–1 जनवरी, 2013 संगीत कार्यालय, हाथरस।
6. संगीत कला विहार, वर्ष 42/अंक–3, मार्च 1989, अ0भा0 गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल प्रकाशन।
7. संगीत कला विहार, वर्ष 56/अंक–6, जून 2002, अ0भा0 गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल प्रकाशन।
8. चौमासा, वर्ष 3/अंक–7, फरवरी–जून 1985, मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला परिषद का प्रकाशन।
9. कलासंगम, अप्रैल–जून, अंक 2011, उत्तर मध्य क्षेत्र, सांस्कृतिक केन्द्र, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, जनपद, नई दिल्ली।